सनई

प्रस्तावना :

सनई की खेती का भारत की कुटीर उद्योग धन्धों एवं अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान है। कुल सनई का लगभग 40 प्रतिशत क्षेत्र उत्तर प्रदेश में है। प्रतापगढ़, जौनपुर, आज़मगढ़, सुल्तानपुर, सोनभद्र, मिर्जापुर, गाजीपुर, वाराणसी, बांदा व इलाहाबाद में सनई की अच्छी खेती होती है।

जलवायु :

सनई की खेती के लिए गर्म नम जलवायु उपयुक्त होती है। फसल उत्पादन समय काल में 40 - 45 सेमी वर्षा अच्छी मानी जाती है।

भूमि का चयन :

बलुई दोमट व दोमट सनई की फसल के लिए उपयुक्त होती है।

भूमि की तैयारी :

पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें। बाद में दो तीन जुताई करके मिट्टी का भुरभुरी कर लेनी चाहिए। अच्छे जमाव के लिए भुरभुरी मिट्टी तथा 35 प्रतिशत नमी आवश्यक है।

उन्नतशील प्रजातियाँ :

नरेन्द्र सनई -1

बुवाई का समय :-

सिंचित क्षेत्रों में बुवाई का समय अप्रैल के दूसरे सप्ताह से लेकर मई के मध्य तक उपयुक्त होता है। इस समय बुवाई करने से दो फायदे होते है। पहला फायदा यह है कि जहाँ चारे की समस्या हो वहां इसके हरे पत्तियों को विशेषकर ऊपरी भाग को पशुओं का खिलाया जा सकता है। दूसरा लाभ यह है कि फसल रोग कीट से मुक्त रहती है। असिंचित क्षेत्र में बुवाई पही वर्षा पर कर देनी चाहिए।

बीज की मात्रा :

सनई के लिए निम्न रूप से बीज दर निर्धारित है -

1. हरी खाद उगाने के लिए अनुमोदित बीज मात्रा : 80 कि0ग्रा0 / हे0
2. रेशे के लिए अनुमोदित बीज की मात्रा : 60 कि0ग्रा0 / हे0
3. बीज उत्पादन के लिए अनुमोदित बीज की मात्रा : 25 - 30 कि0ग्रा0 / हे0

उर्वरक की मात्रा व देने की विधि :

वैसे सनई दलहनी कुल की फसल है इसके जड़ो में गाठें होती है जिसमें नाइट्रोजन फिक्सिंगवैक्टीरिया होते है इस कारण नाइट्रोजन की जरूरत नही होती परन्तु देख गया है कि फसल के प्राथमिक बढ़वार स्थाईत्व व जड़ो में ग्रन्थियों के अच्छे विकास हेतु प्रति / हे0 15 - 20 किग्रा0 नाइट्रोजन व 60 - 80 फास्फोरस उरर्वक की प्रारम्भिक मात्रा अवश्य डालनी चाहिए यदि डी.ए.पी. उपलब्ध न हो तो सिंगल सुपर फास्फेट 125 कि0ग्रा0 / हे0 की दर से प्रयोग करें।

बुवाई की विधि :

क्रम सं0	परिस्थित	पंक्ति से पंक्ति की दूरी (सेमी0 में)	पौध से पौध की दूरी (सेमी0)
1	हरी खाद हेतु	20	4
2	रेशे के लिए	30	10
3	बीज उत्पादन हेतु	45	12.5

सिचाई एवं निराई गुड़ाई :

पहली सिंचाई 25 दिन पर अवश्य करे उसके बाद आवश्यकतानुसार 25 - 30 दिन पर 2 - 3 सिंचाई करते रहें इससे रेशे कर पैदावर अच्छी होती है। यदि निराई-गुड़ाई करनी हो तो पहली सिंचाई के बाद ही कर दे क्योकि बाद में गुड़ाई अवस्था लाभप्रद नही होती है।

फसल की पलटाई :

फसल की हरी खाद के लिए बोई गयी हो तो 45 - 60 दिन पर किसी भारी हल से पलट कर पानी भरे जमीन में दबायें। रेशे हेतु फसल की कटाई :-

अप्रैल/मई में बोयी गयी फसल को 90 - 95 दिन के बाद तथा वर्षा ऋतु में बोई गयी फसल को 50 प्रतिशत फूल की अवस्था पर कटाई कर अच्छे व ज्यादा रेशे प्राप्त किये जार सकते है।

बीज उत्पादन हेतु फसल की कटाई :

बीज हेतु फसल की कटाई लगभग 130 - 135 दिन पर फली से झुनझुन-2 आवाज आने पर उत्तम होती है।

फसल सुरक्षा :

क्रम सं0	कीट	नियन्त्रण
1	कोपल, तना छेदक	मोनोकोटोफास 36 एस0एल0 का 750 मिली लीटर दवा 500-600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
2	फली छेदक	मोनोकोटोफास दवा का 1.5 मिली लीटर पानी में घोल बनाकर 30, 45 व 60 दिन की अवस्था पर छिड़काव करें।
3	सनई की सूडी	थायोडीन 15मिली0 प्रति ली0 पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें

रोग नियंत्रण

क्रम सं0	कीट	नियन्त्रण
1	उक्ठा रोग	4 ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति कि0ग्रा0 बीज की दर से उपचार करें
2	पत्ती का मोजेक रोग	बेवीस्टीन नामक दवा से 2 ग्राम प्रति किलो0 ग्राम बीज को उपचारित करना चाहिए। तथा डाइथेन एम-45 दो किग्रा0/हे0 एवं न्यूवाकान 1 सी0सी प्रति ली0 पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए तथा प्रमाणित बीज ही बोना चाहिए।

पैदावर :

सनई के रेशे वाली पैदावर निम्नवत् प्राप्त होती है -

1. अप्रैल -मई में बुवाई कर सिंचित अवस्था) : 10 - 15 कु0 / हे0
2. जून - जुलाई में बुवाई कर (असिंचित दशा): 7 - 8 कु0 / हे0

सनई उत्पादन हेतु कुछ ध्यान देने योग्य बातें :-

1. सर्वदा नयी प्रजाति, एवं प्रमाणित बीज ही बोयें।
2. हरी खाद उगाते समय कम से कम 50 - 60 किग्रा0 फास्फोरस प्रतिहेक्टर प्रारम्भिक खुराक के रूप में अवश्य प्रयोग करें। इससे पौध बढवार अच्छी होती है साथ में जड़ो में ज्यादा गांठे बनती है क्योकि इन्ही गांठों में नत्रजन प्रदान करने वाले वैक्टीरिया होते है।
3. पानी लगने वाले क्षेत्र में सनई कदापि न उगायें।
4. हरी खाद का भरपूर फायदा उठाने के लिए सनई को 45 - 60 दिन पर जुताई कर पानी भरे जमीन में दबा देना चाहिए।
5. यदि सनई रेशे लेने के लिए उगाई गई हो तो बुवाई 15 मई के आस पास अवश्य कर दे। अधिक रेशे प्राप्त करने के लिए 50 प्रतिशत फूल आने की अवस्था में कटाई करें।
6. बुवाई के पूर्व बीज शोधन 2 ग्राम थीरम प्रति कि0ग्रा0 बीज की दर से अवश्य कर लें।
7. अगेती बुवाई से रोग व कीट प्रकोप कम होता है। उक्ठा रोग की सम्भावना हो तो नीम की खली का प्रयोग करें। अथवा सनई+तिल+कपास की खेती मिलवा फसल के रूप में लें।
8. रोग व कीट नाशी का प्रयोग पुष्पावस्थसा के आस पास व फली बनते समय ही करें।
9. सनई के विभिन्न उद्देश्यों में इसके लिए निम्न रूप में बीज मात्रा पर ध्यान देना होगा।
   - हरी खाद के लिए बीज मात्रा 80 किग्रा0 / हे0
   - रेशे के लिए बीज की मात्रा 60 किग्रा0 / हे0
   - बीज उत्पादन के लिए बीज मात्रा 25 - 30 कि0ग्रा0 / हे0
10. प्रारम्भिक पौध बढवार अवस्था में नील गाय का प्रकोप ज्यादा होता है। सावधान रहें।